

यज्ञ का समय प्रभाव

अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते ।
आदित्याज्जायते वृष्टिः वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः ॥

॥ अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः ॥

न होता प्रदूषण और रोगों का वार ।
करते यदि यज्ञ-पेड़-पौधों का विस्तार ॥

प्रज्वलिताग्नि से प्रेरणा

- ऊष्मा-राग, द्वेष, काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, अहंकार का विनाश
- गति-विकास, उत्साह, सफलता, निरन्तर वृद्धि, नयी प्रेरणा, नया संकल्प
- प्रकाश-ज्ञान, विज्ञान, त्याग, सत्य, दया, तप, आत्मस्वरूप अंतःकरण में व संसार की भौतिक सम्पत्ति का प्रकाश

पंच महायज्ञ

- ब्रह्मयज्ञ
- देवयज्ञ
- पितृयज्ञ
- अतिथियज्ञ
- बलिवैश्वदेवयज्ञ

चार हविर्द्रव्य

- सुगंधित
- पुष्टिकारक
- मिष्ट
- रोग निवारक

चार वेद व ऋत्विक्

- होता - ऋग्वेद
- अध्वर्यु - यजुर्वेद
- उद्गाता - सामवेद
- ब्रह्मा - अथर्ववेद

समिधा
घी



॥ अग्निर्वै देवानां मुखम् ॥

यज्ञभस्म व शुद्ध जल से उत्तम कृषि अन्न, ओषधि, लता, वृक्ष, वनस्पति, घास आदि से भोजन में सात्विकता

